पाठ 4

आप अपनी सर्वश्रेष्ठ आवश्यकता कैसे पूरा कर सकते हैं?

इस पाठ में आप पढ़ेंगे।

- आपकी सर्वश्रेष्ठ आवश्यकता क्या है?
- आपकी सर्वश्रेष्ठ आवश्यकता को यीशु कैसे पूरा करते हैं?
- क्या यीशु आपका मुक्तिदाता है?
- आपकी अन्य अवश्यकताएं क्या हैं?

भाग I

आपकी सर्वश्रेष्ठ आवश्यकता क्या है?

क्या यह आपकी देह या आत्मा के लिए है?

जो मरुस्थल या वन में भटक जाता है, या बल्लियों के बेड़े पर सागर में बह जाता है, उस **व्यक्ति** को ढूँढ़ने और बचाने की आवश्यकता है। भूखे **व्यक्ति** को भोजन, मृत्युदण्ड अपराधी को क्षमा और विष दिये गये व्यक्ति को औषधि की आवश्यकता है।

यद्यपि ये परमावश्यक आवश्यकताएँ हैं तो भी आपकी आवश्यकता इनसे श्रेष्ठ है। एक दिन आपकी देह तो मर जाएगी। पर आत्मा या तो अनन्त आनन्द में निवास करेगी, या सदाकाल तक मृत्यु का आतंक सहेगी। अतएव आपके आत्मा का जीवन और स्वास्थ्य अधिक महत्वपूर्ण है। आपकी देह की प्रमुख आवश्यकताएँ भी उतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं।

मत्ती 10:28 जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना, पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है।

आपकी सर्वश्रेष्ठ आवश्यकता मुक्तिदाता की है

बाइबल सिखाती है कि मनुष्य भटका, भूखा, रोगी और मृत्यु दण्ड पाया हुआ है। ढूँढ़ने, भोजन, औषधि और क्षमा पाने के लिए मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ आवश्यकता एक मुक्तिदाता की है क्योंकि आप स्वयं अपना उद्धार नहीं कर सकते हैं।

- माता-पिता मसीही होने से आपको मुक्ति नहीं मिलेगी।
- किसी मण्डली की सदस्यता से आपको मुक्ति नहीं मिलेगी।
- स्वयं को उत्तम बनाने की कोशिश से आपको मुक्ति नहीं मिलेगी।

मुक्तिदाता के बगैर आप मुक्ति नहीं पा सकते हैं।

आपका काम

- कौन अधिक महत्वपूर्ण है देह या आत्मा.....
- मैं (आपका नाम).....की बहुत आवश्यकताएं हो सकती हैं परन्तु मेरी सर्वश्रेष्ठ आवश्यकता.....क्योंकि मैं स्वयं को पाप और मृत्यु से.....नहीं सकता।
- यदि आप पहले ही यीशु ख्रीष्ट को अपना मुक्तिदाता मान चुके हैं तो यह पाठ आपके लिए बहुत महत्पूर्ण है, और आपके दैनिक जीवन में परमेश्वर आपकी सहायता करेगा।

भाग 2

आपकी सर्वश्रेष्ठ आवश्यकता को यीशु कैसे पूरा करते हैं?

यीशु मुक्तिदाता है जिसे परमेश्वर ने आपके निमित्त भेजा है।

परमेश्वर ने अपना पुत्र इसलिए भेजा कि आपकी आत्मा को जो पाप में मर चुकी थी, ढूँढ़े,भोजन दे, और चंगाई दे। वह मनुष्य बना ताकि आपके बदले मर सके और क्षमा दे। उसका नाम यीशु है जिसका अर्थ है "छुटकारा देनेहारा।" सिर्फ वही आपको छुटकारा दे सकता है।

याद कीजिये

प्रेरितों के काम 4:12 और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।

यीशु आपको सत्य और मार्ग दिखाते हैं

शैतान ने हमारी बुद्धि को त्रुटियों और **अविश्वास** से अन्धा कर दिया है। हम परमेश्वर से दूर हो गये हैं, और मार्ग से भटके हैं। शैतान कोशिश में है कि हम परमेश्वर के **वचन**, सामर्थ, बुद्धि, कृपा और प्रेम पर सन्देह करें। कुछ **व्यक्ति** परमेश्वर के अस्तित्व पर भी सन्देह करते हैं।

2 कुरिन्थियों 4:4 उन **अविश्वासियों** के लिए, जिनकी बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है...।

शैतान, बहुत लोगों को झूठे धर्मों से धोखा देता है। कुछ **व्यक्ति** तो दुष्टआत्माओं और मूर्तियों से प्रार्थना करते हैं।

रोमियों 1:23 अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों और चौपायों, और रेंगने वाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला।

हमारे निमित्त क्या उत्तम, सही और गलत है, इस विषय में शैतान झूठ बोलता है। हम अनुचित मार्गों पर खुशी खोजते हैं पर बदले में मृत्यु मिलती है।

यीशु हमको खोजने, खुशी देने, अनन्त जीवन देने, और परमेश्वर के पास वापस ले जाने आये। उसमें और उसकी शिक्षा में आप सत्य पायेंगे, और **अविश्वास** और भूलों से स्वतन्त्र होंगे। परन्तु शैतान ऐसा नहीं है।

याद कीजिये

यूहन्ना 14:6 यीशु ने उससे कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।

लूका 19:10 क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोये हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है।

यूहन्ना 8:12 जगत की ज्योति मैं हूं जो मेरे पीछे हो लेगा जीवन की ज्योति पायेगा।

यूहन्ना 8:32 सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।

अगर कोई निष्कपटता से सत्य जानने के लिए परमेश्वर के पास आये, उसके पालन के लिए सहमत हो, तो परमेश्वर सत्य उस पर प्रगट करेगा। बाइबल

पढ़िये और खुले मन से प्रार्थना कीजिये; जो परमेश्वर चाहे उसे करने को तत्पर रहिये।

यूहन्ना 7:17 जो कोई परमेश्वर की इच्छा पर चलना चाहे.....जान जायेगा कि वह परमेश्वर की ओर से है।

रोमियो 12:2 परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चालन भी बदलता जाये, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।

आपका काम

- शैतान या यीशु शब्द में उत्तर दें।
  जो भला है उससे हमें कौन अन्धा करता है?.....परमेश्वर कैसा है कौन दिखाता है?.....भूलों और **अविश्वास** से कौन स्वतंत्र करता है?.....हममें परमेश्वर के **वचन** पर सन्देह कौन पैदा करता है?.....
  लोगों को झूठे धर्मों का अनुयायी कौन बनाता है?.....

प्रार्थना

परमेश्वर आपका धन्यवाद हो, आपने अपने पुत्र यीशु को भेजा कि मुझे सत्य दिखाये। कृपया मुझे सत्य दिखाइये और उसके पालन करने में मेरी सहायता कीजिये।

पहले ही आपने सीखा है कि पाप परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन है। सबसे बड़ा पाप यही है कि परमेश्वर की महत्वपूर्ण आज्ञा तोड़ी जाये। क्या ऐसा नहीं? यीशु ने हमको बताया है कि बड़ी आज्ञा कौन सी है।

मत्ती 22:37-39 तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।

बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ौसी से अपने समान प्रेम रख।

हम सबने परमेश्वर की दो अति महत्वपूर्ण आज्ञाएँ तोड़ी हैं। स्वार्थ, ने हमारा हृदय भर दिया है और प्रेम का गला घोंट दिया है। परमेश्वर के प्रेम का बदला हमने उदासीनता और कृतघ्नता से दिया है। परमेश्वर और दूसरों से अधिक, हम स्वयं को श्रेष्ठ समझते हैं। हमारे स्वार्थ से भरे हृदय से ही सब तरह के, संकट **व्यक्तियों** और राष्ट्रों के मध्य खड़े हो गए। हम पाप से पीड़ित **विश्व** में रहते हैं।

2 तीमुथियुस 3:2-4 क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी, लोभी, भी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालने वाले कृतघ्न, अपवित्र, मयारहित, क्षमारहित, दोषलगाने वाले, असंयमी कठोर, भले के बैरी, विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी और परमेश्वर के नहीं वरन् सुख विलास ही के चाहने वाले होंगे।''

यीशु मृत्युदायक पाप अपस्वार्थ से आपकी आत्मा को चंगाई देने आए। आपको परमेश्वर के प्रेम से भरपूर करने आए।

1 यूहन्ना 1:9,7, यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। पर यदि जैसा वह ज्योति में है वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते हैं : और उसके पुत्र यीशु का लहू अपने सब पापों से शुद्ध करता है।"

, रोमियों 5:5 क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।

आपका काम

- क्या आपने परमेश्वर की दो बड़ी आज्ञाएं तोड़ी हैं?.....
- 2 तीमु० 3:2-4 फिर पढ़िए और प्रत्येक पाप, जिसका यहाँ उल्लेख है, यदि जीवन में आप उसके एक बार अपराधी हों, तो उसके नीचे लकीर खीचें।
- परमेश्वर से प्रार्थना करें कि आपका हृदय अपने प्रेम से भरें।

यीशु पाप और शैतान की शक्ति को तोड़ता है

पाप ने हमारी इच्छा की शक्ति को इतना निर्बल कर दिया है कि हम जो जानते हैं, हमें करना चाहिए, वे काम नहीं कर सकते हैं।

यूहन्ना 8:34 जो कोई पाप करता है, वह पाप का दास है।

रोमियों 7:14,15,18 मैं पाप के हाथ बिका हुआ हूँ.....जो मैं चाहता हूँ वह नहीं किया करता, परन्तु जिससे मुझे घृणा आती है, वही करता हूँ.....इच्छा तो मुझमें है परन्तु भले काम मुझसे बन नहीं पड़ते।
यीशु पाप की बेड़ियां तोड़ता है और बुरी आदतों से छुटकारा देता है। क्रोध, जुआ, श्राप, अनैतिकता, तम्बाकू का व्यसन, मद्यपान और विषैले पदार्थों से स्वतंत्र करता है। वह दुष्ट आत्माओं और शैतान की शक्ति तोड़ता है।

याद कीजिए

यूहन्ना 8:36 सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा तो सचमुच तुम स्वतंत्र हो जाओगे।

यीशु ने आपकी जगह ली—आपके लिए क्षमादान प्राप्त किया

परमेश्वर के न्याय की माँग है कि पाप का दण्ड मृत्यु होना चाहिए। उसने आपसे इतना प्रेम किया कि आपके बदले अपने पुत्र को मरने दिया। जब यीशु मरे—ऐसा ही था जैसे आप मरे हों। चूँकि वह फिर जी उठा है, और स्वर्ग गया, सो आप भी जाएँगे।

1 पतरस 2:19,20 वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिए मर करके धार्मिकता के लिए जीवन बिताएँ।

गलतियों 2:19,20 मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिए मर गया, कि परमेश्वर के लिए

जीऊँ। मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ और अब मैं जीवित न रहा पर मसीह मुझमें जीवित है : और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए अपने आपको दे दिया।"

जब यीशु को अपना मुक्तिदाता ग्रहण करते हैं तो उसकी मृत्यु अपनी मृत्यु उसका जीवन अपना जीवन स्वीकार करते हैं। उसी क्षण आप परमेश्वर के पुत्र, पुत्री बन जाते हैं। पाप ने तो आपको परमेश्वर से अलग कर दिया था परन्तु यीशु के द्वारा आपको क्षमा, नया जीवन और परमेश्वर से संगति मिली। ऐसी संगति कि जैसे आपने पाप किया ही नहीं था।

आपका काम

- पृष्ठ 8 को **दो बार** पढ़िए।
- अगर आप में कोई ऐसी आदत है जिससे आप स्वतंत्र होना चाहते हैं तो यीशु को उसके **विषय** प्रार्थना में बताइए और कहें कि उससे छुटकारा दे।

भाग 3

क्या यीशु आपका मुक्तिदाता है?

फैसला करना आपका काम है

यीशु आपके मुक्तिदाता बनना चाहते हैं, पर ग्रहण करने के लिए आप पर दबाव नहीं डालेंगे।

यीशु को ग्रहण करने का समय अभी है

अगर अभी तक आपने यीशु को मुक्तिदाता ग्रहण नहीं किया तो अभी ग्रहण करें। अभी उत्तम समय है।

बाद में बहुत देर हो जाएगी। साथ ही यीशु के उत्तम जीवन का आनन्द प्रतिदिन लेना चाहते हैं। आज आपके हृदय के द्वार पर वह खटखटा रहा है। उसको भीतर आने दें।

प्रकाशितवाक्य 3:20 देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ।

इब्रानियों 3:15 यदि आज तुम उसका शब्द सुनो तो अपने मनों को कठोर न करो।

2 कुरिन्थियों 6:2 देखो अभी वह प्रसन्नता का समय है देखो; अभी वह उद्धार का दिन है।

आपका काम

यीशु बिल्कुल आपके पास है। और आपकी प्रार्थना सुन सकते हैं। अपने शब्दों में उसे धन्यवाद दें कि वह आपके पापों के लिए मरा और कहें कि मेरा मुक्तिदाता हो। अगर आप इससे पहले ग्रहण कर चुके हैं तो आपकी सर्वश्रेष्ठ आवश्यकता पूरा करने के लिए धन्यवाद दें।

भाग 4

आपकी अन्य आवश्यकताएं क्या हैं?

आपका पिता आपकी चिन्ता करता है

मत्ती 6:31-33 इसलिए तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे या क्या

पहिनेंगे? तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें ये सब वस्तुएँ चाहिएं। इसलिए पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।

प्रतिदिन अपनी आवश्यकताओं के विषय परमेश्वर से बात कीजिए

फिलिप्पियों 4:6 किसी भी बात की चिन्ता मत करो : परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ।

यीशु आपको चंगाई देंगे

प्रार्थना के उत्तर में वे अभी भी लोगों को चंगाई देते हैं।

प्रेरितों के नाम 10:38 यीशु नासरी .....अच्छा करता फिरा।

इब्रानियों 13:8 यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एकसा है।

आपका काम

परमेश्वर का उसकी सुरक्षा के लिए धन्यवाद कीजिए। यदि कोई समस्या है, उसके लिए सहायता माँगिए।